Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, NOV-DEC, 2021, VOL- 9/68

16 वी से 17 वी शताब्दी के मध्य निम्नवर्ग की आर्थिक स्थितिः हरियाणा के परिपेक्ष्य में

अनीता कुमारी

Paper Received On: 21 DEC 2021
Peer Reviewed On: 31 DEC 2021
Published On: 1 JAN 2022

Abstract

किसी भी क्षेत्र या साम्राज्य के लोगो का जीवन स्तर वहां के भौतिक संसाधनों, शासन की उस क्षेत्र विशेष के प्रति नीति तथा लोगो की कार्यपद्धति पर निर्भर करता है । जहां हम सल्तनत काल में लोगो का जीवन स्तर उतना अच्छा नहीं पाते वहीं मुगल काल में यह उतना अच्छा नहीं तो सन्तोषजनक अवश्य था । यह किसी भौगोलिक या प्राकृतिक बदलाव का परिणाम नहीं था वरन् यह शासन की लोगो तक पहुचं तथा भौतिक संसाधनों में वृद्धि व उनके अधिकाधिक उपयोग का परिणाम था । मुगल सम्राट जानते थे कि राज्य की समृद्धि जनता की खुशहाली पर निर्भर करती है । अतः उन्होने इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए । मुगल कालीन, वैसे ही अकबरकालीन, हरियाणा में समाज भी जाति प्रथा के कारण अनेक जातियों व उपजातियों में बटां हुआ था । परन्तु जहां तक आर्थिक रूप से वर्ग विभाजन का प्रश्न है तो हमें दो प्रमुख वर्ग नजर आते है – 1. शासक वर्ग 2. शाषित वर्ग । इनको हम उपभोगता व उत्पादक वर्ग भी कह सकते है । उत्पादक, वह आम जनता थी जो उत्पादन करती थी परन्तु जिसका अधिकांश भाग का उपभोग दूसरा वर्ग अर्थात उपभोगता वर्ग करता था । मुख्य उपभोगता वर्ग में जहां उच्च वर्ग अर्थात् शाही परिवार व अधिकारी आते थे वहीं उत्पादक वर्ग में मध्यम व निम्न वर्ग के लोग आते थे । इनमें प्रमुखतः छोटे जमींदार, किसान, मजदूर, कारीगर, शिल्पी, व्यापारी, दास आदि आते थे ।

कुंजी शब्द : *चाहकन, 'खिश्ततराश' 'खुदकाश्त', 'पहिकाश्त,' 'गिलकार', 'संगतराश', हज्जाम, अन्तयजा, 'दाम,' 'सिमगिल,' 'तकावी ऋण' अर्धदास,*

प्रस्तावना

16वीं 17वीं शताब्दी में आए विदेशी यात्रियों ने जहां अमीर वर्ग के विलासिता पूर्ण जीवन का वर्णन किया है वही हरियाणा के ग्रामों में रहने वाली साधारण जनता की आभाव ग्रस्त स्थिति का वर्णन किया है । इस वर्ग अन्तर्गत निम्न दर्जे के किसान जिनके पास खुद की जमीने थी, गिल्कार, पत्थर काटने वाले, बढ़ई, 'चाहकन', (कुआं खोदने वाले), 'खिश्ततराश' (ईंट बनाने वाले), लुहार, चर्मकार, कुम्हार, दास, गुलाम तथा भिखारी लोग आते थे । यह वर्ग गांव में रहकर ही अपना गुजारा करता था । एक ही वंश परम्परा तथा विभिन्न समाजिक तथा धार्मिक बंधनो से बंधे लोगो का पूरा समुदाय बहुधा कई मिले–जुले गांव में निवास करना था । इनमें से अधिकांशत जनता कृषि कार्यो मे लगी हुई थी । जिनके द्वारा कृषि तथा गर कृषि उद्योगो को भी चलाया जाता था । इन लोगो का आर्थिक जीवन प्रशासन तंत्र पर आधारित था । किसान खेत में पूरे साल के लिए काम नही करता था । काम की अधीकता बुआई तथा कटाई के समय अधिक बढ़ जाती थी । वह अपना खाली समय घरेलु उद्योगो में लगता था । तेल निकालना, सूत

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

कातना, गुड तथा शक्कर का निर्माण करना, इत्यादि कार्य घर में रहकर ही किए जाते थे । किसान इन उद्योगो को इसलिए चलाता था क्योकि उसके खेतो में उत्पादित फसल, अच्छे साधनों की कमी के कारण तथा बीज की कमी के कारण बहुत कम होती थी । उसके द्वारा फसलों का उत्पादन मुख्यतः अपने परिवार के लोगों का गुजारा करने के लिए किया जाता था । नील, कपास, चाय, विभिन्न व्यापारिक फसले उगाना उसकी पहुंच से बाहर थी ।

यद्यपि निम्न वर्ग के मुसलमानों की गांवो में संख्या कम होती थी, फिर भी हिन्दुओं के साथ मिलकर रहते थे ।[1] खुदकाश्त व *पहिकाश्त* की बजाय इस वर्ग के लोगो की समाज में संख्या अधिक थी । इनमें छोटे किसानों के अतिरिक्त बहुत से खेतीहर मजदूर थे जिनका भूमि पर किसी प्रकार का कोई अधिकार नहीं होता था ओर ये मजदूरी करते थे ।[2] जमींदार इनसे बहुत काम लेता था तथा इनको केवल उतना ही मिलता था जिससे की उनका गुजारा भी मुश्किल से हो सके । खेतीहर मजदूरों को वेतन अनाज के रूप में मिलता था ।प्रो. के. एस. लाल के अनुसार, बड़े किसानों द्वारा पाई जाने वाली व्यापारिक फसलों का इन्हें लाभ नही मिल पाता था । इन किसानों की दशा सोचनीय थी । अगर वहां कोई प्रगति हुई तो वह कर प्राप्ति में हुई ।[3] वर्षा पर मुख्यत कृषि होने के कारण तथा कर ऊँचा होने के कारण उनके लिए यह सम्भव नहीं था कि ये समय पर कर का पूरा भूगतान कर सकते ।[4] इन किसानों द्वारा अच्छे यन्त्रों का भी प्रयोग नहीं किया जाता था ।

शहरों में रहने वाले गरीब लोगो की गणना करना मुश्किल था । बाबर ने वर्णन किया है कि भारत में एक अच्छी बात यह थी की यहां हर जगह हर तरह के कारीगर मिल जाते थे । कारीगर व कामगारों के अतिरिक्त शहर में एक बड़ा भाग घरेलु नोकरों का होता था । बड़े लोगो द्वारा नौकर रखने की परम्परा सदा से ही भारतीय समाज की विशेषता रही है ।[5] किसानों के पास अच्छे साधन नही थे तथा उनके द्वारा खेती करने का तरीका भी अच्छा नही था । उनके द्वारा भद्दे कृषि यन्त्रों का प्रयोग किया जाना था और अपना जीवन निर्वाह के लिए वे गांव में निर्मित वस्तुओं पर ही निर्भर रहते थे ।[6]

इनका जीवन प्रशानिक या स्थानीय अधिकारियों खुत, मुकद्दम, पटवारी तथा जमीदारों इनके अलावा पंचायतों द्वारा भी ग्राम प्र ाासन चलाया जाता था । कारीगरों द्वारा काम करने का पुराना तरीका अपनाया जाता था । कारीगरों से सम्बन्धित उद्योग मुख्यतः जाति प्रथा पर आधारित थे, जिससे

---

[1] के. सी. यादव, *हरियाणाः इतिहास एवं संस्कृति, जिल्द द्वितीय,* दिल्ली, 1990, पृष्ठ 3

[2] ओमप्रकाश, *भारत का आर्थिक इतिहास*, इलाहाबाद, 1997, पृष्ठ 14

[3] के. एस. लाल, *हिस्ट्रोरिकिल ऐसंज*, दिल्ली, 2001,पृष्ठ 83

[4] वही, पृष्ठ 85

इरफान हबीब व तपनराय चौधरीः *द् कैम्ब्रिज इकॉनामिक हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, जिल्द प्रथम,* कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रैस, दिल्ली 1993, पृष्ठ 463

[6] डी एन. मलिक, *मिडिवल ट्रेडीशन ऑफ ए रिजन,* रोहतक 1982, पृष्ठ 35

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

कारीगर इनसे उपर उठने की सोच भी नही रखता था । गिलकार, संगतराश, बढई, आदि कारीगरों द्वारा कार्य करके अपने परिवार का पेट भरा जाता था ।[7] चाहे किसान हो या शिल्पी दोनो कृषि व गैर कृषि दोने तरह का कार्य करते थे । कारीगरों के कार्य करने के बड़े–2 कमरे होते थे । ये लुहार, पेन्टर, दर्जी, मोची, रेशम का कार्य करने वाले आदि होते थे । कच्चे माल की आपूर्ति के पश्चात अधिकारियों के निर्देशन में ये कार्य करते थे । कई बार उत्पाद की क्षमता बढ़ाने के लिए कारीगरों को ज्यादा वेतन भी दिया जाता था ।[8] बढई, लुहार, कुम्हार, धोबी, हज्जाम, चमार, कुम्हार आर्य आदि से सम्बन्धित कारीगर गांवों में भी रहते थे तथा कस्बों व शहरों में भी । हरियाणा क्षेत्र के उस समय विभिन्न स्थानों पर कुछ वस्तुओं से सम्बन्धित कारखाने थे जिनमें वहां की आसपास के कारीगर काम करते थे । हिसार में सिल्क से सम्बन्धित काम होता था वही सिरसा में रोगन से सम्बन्धित ।[9] नारनौल में पानीपत से आने वाले सूत की गांठे बंधती थी जो वापिस पानीपत चला जाता था ।[10] यहां सोने की खाने, टकसाल के साथ–2 लोहे व तांबे की खाने भी थी । पत्थर का काम, बर्तन निर्माण आदि में भी यहां के कारीगर कार्य करते थे ।[11] सोनीपत में जहां हथियार व स्टील के बर्तन बनेते थे वहीं पानीपत में बड़ी संख्या में कारीगर सूती वस्त्र से सम्बन्धित उद्योग में लिप्त थे ।[12] इन उद्योगो में प्रयोग होने वाला कच्चा माल मुख्यतः गांवो से ही प्राप्त हो जाता था । इन उद्योगो में कार्य मुख्यः कारीगरों द्वारा अपने परिवार के सदस्यों की सहायता से किया जाता था । वस्तुओं का उत्पादन करने में गांव के कारीगर आत्मनिर्भर थे ।[13] परन्तु सभी कारीगरों की स्थिति एक जैसी नही थी । कुछ ऐसे कारीगर भी थे जिनके पास साधन तथा उद्योगो की कमी के कारण दूसरे कारीगरों की सहायता की जाती थी हालांकि इन कारीगरों को मजदूरी बहुत कम मिलती थी ।

किसानों व निम्न वर्ग के लोगों के आम जीवन कठिनाईयों से युक्त था । ये छोटे कच्चे घरों में रहते थे ।[14] किसान परिवार के साथ एक छोटे घर में रहता था जो घास–फूस व किचड़ का बना होता था । कई बार गरीब अपने घर के कमरे में ही गाय या बकरी भी रखता था । हालांकि अधिकतर घर कई कमरों के होते थे । ये परिवार के आकार, अनाज रखने हेतु जगह पर निर्भर करता था । आमतौर

---

[7] ओम प्रकाश, *भारत का आर्थिक इतिहास*, इलाहाबाद 1997, पृष्ठ 113

[8] नीलम चौधरी, *सोसियो इकॉनामिक हिस्ट्री ऑफ मुगल इण्डिया,* दिल्ली 1987, पृष्ठ 14

[9] हमीदा खातुन नकवी, एग्रीकल्चरल इण्डस्ट्रीज एण्ड डाइनमिज्म अण्डर सुल्तान आफ देहली, पृष्ठ 113

[10] वही, पृष्ठ 113

[11] इरफान हबीब, *एन एटलस आफ द् मुगल एम्पायर,*कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रैस, दिल्ली 1986, सीट 4 बी, पृष्ठ 12–13

[12] अबुल फजल, *आईन–ए–अकबरी, जिल्द प्रथम और द्वितीय,* हिन्दी अनुवाद हरिवंश राय शर्मा, दिल्ली 1966, पृष्ठ 300

[13] मोरलैण्ड, *अकबर की मृत्यु के समय का भारत,* दिल्ली, 1996 (प्रथम संस्करण 1976),पृष्ठ 170

[14] नीलम चौधरी, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 15

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

पर खिड़कियाँ नहीं होती थी, तथा दरवाजा ही हवा व रोशनी के लिए पर्याप्त होता था । किसानो के घरों में बांस की चटाई और चारपाई के अलावा मुश्किल से ही कोई फर्नीचर होता था ।[15] छत बनाने के लिए प्रयुक्त घास–फूस आसानी से स्थानीय स्तर पर ही प्राप्त हो जाते थे ।[16] घास फूस को अटकाने के लिए लकडी के शहतीर का प्रयोग किया जाता था । सिमगिल से झोपड़ी की दिवारों को पोता जाता था । पोतते वक्त इसमें गेहूं की नराई का भूसा मिट्‌टी में मिलाया जाता था । दरवाजे के लिए लकड़ी की फटिट्‌यों का प्रयोग करता था ।[17] इनके घर गांव में एक दूसरे से सटे हुए थे । गांवो की झोपड़ियाँ छोटी तथा भद्‌दी होती थी । किसी भी विदेशी यात्री द्वारा आम लोगो के घरों की सराहना नहीं की गई ।[18] इनके घरों में मुख्यत मिट्‌टी के बर्तनों का प्रयोग होता था । लोहे की धातु का बहुत कम प्रयोग किया जाता था । सोना तथा चांदी इनकी पहुंच से बाहर थी क्योकि इनकी कीमत बहुत ज्यादा थी ।[19] इनके अलावा नीचे तबके के लोग जिनके पास आय के कोई साधन नहीं थे, ये लोग प्राय नंगे रहते थे । बाबर के अनुसार, ऐसे लोगो के घर पल भर में उजड़ जाते थे तथा पल भर में बस जाते थे । ये अपनी बस्तियां ऐसे स्थानों पर बनाते थे जहां पर इनको पानी आवास तथा मजदूरी की सुविधा प्राप्त हो सको । कुशल मजदूरों की दशा थोड़ी ठीक होने के कारण के अपना व अपने परिवार का गुजारा चला देते थे परन्तु जिन मजदूरों की मजदूरी कम थी, जैसे घास काटने वाले, उनके लिए जीवनयापन मुश्किल हो जाता था ।[20]

रहन, सहन के बारे में बाबर ने लिखा कि भारत में किसान और निम्न तबके के लोग नंगे पैर चलते है । इसके पश्चात वह लोगो की वेशभूषा का वर्णन करता है वह महिलाए द्वारा साड़ी पहनने का वर्णन करता है ।[21] आम लोग इतने गरीब थे कि उनमें से अधिकतर नंगे रहते थे । हालांकि राल्फ फिच के अनुसार लोग नंगेपन को बचाने के लिए केवल बीच में एक कपडा बांधते थे । सर्दीयों में लोग सूत की रजाई, लबादा व टोप (पगड़ी) पहनते थे ।[22] सामान्य जनता चाहे वो हिन्दु हो या मुस्लिम, भोजन में रोटी, दालें व हरी शब्जियां मुख्य होती थी । इनके अतिरिक्त ज्वार, बाजरा आदि भी प्रयोग में आते थे । मुख्यतः दूध, घी का प्रयोग किया जाता था ।[23] यद्यपि यह क्षेत्र गेहूं उत्पादक था तथापि गेहूं आम जनता का नियमित भोजन नहीं था ।[24] पेलसर्ट दिल्ली–आगरा क्षेत्र के कामगारों के बारे में कहता है कि मांस

---

[15] हबीब, चौधरी, पूर्व उद्‌धृत, पृष्ठ 460–461

[16] के. एम. अशरफ, *हिन्दुस्तान के निवासियों का जीवन व परिस्थितियां,* दिल्ली, 1990(प्रथम संस्करण 1969) पृष्ठ 210

[17] मोरलैण्ड, पूर्व उद्‌धृत, पृष्ठ 247

[18] वही, पृष्ठ 247

[19] अशरफ, पूर्व उद्‌धृत, पृष्ठ 170

[20] शीरीन मुसवी, *इकॉनामी ऑफ द्‌ मुगल एम्पायर,* दिल्ली 1987,पृष्ठ 300–01

[21] इरफान हबीब, तपनराय चौधरी, पूर्व उदृधृत, पृष्ठ 459

[22] वही, पृष्ठ 459–60

[23] नीलम चौधरी, पूर्व उद्‌धृत, पृष्ठ 193

[24] हबीब, पतनराय चौधरी, पूर्व उद्‌धृत, पृष्ठ 461

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

के बारे में थोड़ा जानते थे । नियमित भोजन में वे खिचड़ी का प्रयोग करते थे । गुड़ का भी प्रयोग किया जाता था । सामान्य प्रकार के फल जैसे– आम, खरबूज, बेर, नारीयल आदि गरीब लोगो को भोजन में उपलब्ध रहते थे ।

गांवों में रहने वाले लोगों के पास पानी की समुचित व्यवस्था नहीं थी । अकाल के समय महामारी तथा टिड्डियों द्वारा फसलों को नष्ट कर दिया जाता ।[25] परन्तु कई बार अकाल मुख्य राजनीतिक अराजकता तथा फसलों की खराबी या सुखा पडने की वजह से पड़ते थे जिससे किसानों के साथ–साथ समाज के अन्य लोगों का जीवन भी प्रभावित होता था । इन अकालों से गरीब जनता का जीवन बिल्कुल अस्त व्यस्त हो जाता है । जिससे वर्षा के साथ–साथ अन्य उद्योग भी ठप्प हो जाते थे तथा इसके लिए किसान को कोई बाहरी सहायता नहीं मिलती थी ।[26] अकबर द्वारा जारी की गई सुविधाएं स्थानीय अधिकारियों के स्वार्थपन के कारण आम जनता तक बहुत कम ही पहुंच पाती थी ।

निम्न वर्ग से सम्बन्धित एक वर्ग अंत्यजा का होता था। जो अन्तिम वर्ण के में पैदा होता था। धोबी, चमार, डोम, भेद, भिल्ल आदि जातियाँ अंत्यजा के अर्न्तगत आती थी। समाज के अन्य वर्ण के लोग इन्हें अछूत मानते थे। ये सामान्यतः गांवों से बाहर रहते थे तथा केवल कुछ ही परिस्थितियों में ये गांवों में प्रवेश करते थे । ये ज्यादातर शिकार करके अपना पेट भरते थे । जिस समय हिन्दूस्तान पर मुस्लिम आक्रमण हुआ तो सबसे पहले इस्लाम स्वीकार करने वालों मं यही लोग थे । अकबर के शासन काल में 1556 ई0 में बहुत भंयकर अकाल पड़ा । यह अकाल पानीपत की दूसरी लड़ाई के समय पड़ा । अनाज तथा चारे के अभाव के कारण हजारों लोग भुखे मर गए । इस अकाल से बहुत जान–माल की हानि हुई । बदायूनी द्वारा इस अकाल का आखों देखा वर्णन किया गया है ।[27]

परन्तु इसके अलावा किसी बाहरी आक्रमण द्वारा भी इन लोगों की स्थिति बहुत खराब हो जाती थी । हजारों सैनिकों का गुट जब इन किसानों के क्षेत्र से होकर गुजरता था तो वह खडी फसल को नष्ट कर देता था ।[28]

अकबर द्वारा किसानों की सहायता के लिए भूमि कर कम करवा दिया गया तथा उनकी सहायता के लिए *तकावी* ऋण भी दिया जाता था परन्तु यह किसानों तक बहुत कम पहुंच पाता था तथा इस ऋण के चुकाने पर किसानों को अपने बच्चो तथा स्त्रियों को गिरवी रखना पड़ सकते थे ।[29] अकाल तथा बाढ की समस्या से बचने के लिए अकबर ने फिरोज शाह तुगलक द्वारा बनवाई गई नहरों को पुर्ननिर्मित करवाया ताकि लोगो को काम के साथ–साथ अकाल की समस्या से भी बचा जा सके । इन नहरों के

[25] शीरीन मुसवी, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 332
[26] मोरलैण्ड, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 197
[27] के सी. यादव, *हरियाणाः इतिहास एवं संस्कृति, जिल्द द्वितीय,* दिल्ली, 1990, पृष्ठ 412
[28] डी. एन. मलिक, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 23–25
[29] ओम प्रकाश, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 13

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

कारण अधिक से अधिक लोग गांव में बसने लगे ।[30] 'अकाल की स्थिति में किसानों द्वारा उपज का कुछ हिस्सा रख लिया जाता था परन्तु जिनके पास जमीने नहीं होती उनकी स्थिति ओर ज्यादा खराब हो जाती थी और ऐसी स्थिति में गांव को बसने तथा उजड़ने में ज्यादा समय नही लगता था । ग्रामों में घास अधिक होने के कारण झोपड़िया शीध्र बना ली जाती थी ।[31] इस वर्ग के लिए अकबर द्वारा विभिन्न सुविधाएं प्रदान की ताकि किसानों के साथ अन्य लोगो का जीवन सुधर सकें । इसके द्वारा रास्ते में विभिन्न सरायों का निर्माण करवाया गया ।उसके द्वारा इस क्षेत्र में विभिन्न मदरसों का भी निर्माण करवाया जिसमें शिक्षा की व्यवस्था की गई ।[32]

मजदूरी से भी आर्थिक स्थिति का पता चलता था । विभिन्न आधुनिक इतिहासकार सीरीन मुसवी, इरफान हबीब, तथा मोरलैण्ड ने अकबर के समय से दी जाने वाली मजदूरी पर प्रकाश डाला है । अकबर के शासन काल से पूर्व ही मजदूरी व्यवस्था चलती आ रही थी । काम करने के पश्चात मजदूर को उसके कार्य करने के पश्चात जो आय प्राप्त होती थी उसको मजदूरी कहा जाता था । अकबर के शासन में कुशल तथा अकुशल कारीगर या मजदूर रहते थे । ये कारीगर या मजदूर गांवो, कस्बों तथा शहरों में रहते थे जिनको उनकी योग्यता के हिसाब से मजदूरी दी जाती थी ।[33]

अबुल फजल द्वारा अपनी पुस्तक आइने अकबरी में विभिन्न प्रकार के कुशल तथा अकुशल कारीगरो की सूची दी गई है । परन्तु उसके द्वारा इस बात की कोई व्यवस्था नही की गई कि किसी उद्योग में कितने मजदूरों द्वारा कार्य किया जाता था, जिसके आधार पर मजदूरी का अन्दाजा नहीं लगाया जा सकता ।[34]

ग्रामीण उद्योग में या खेतो में काम करने वाले मजदूरों को मजदूरी मुख्यतः अनाज या फसल के रूप में दी जाती थी । 'आईने अकबरी' के भाग दो में विभिन्न मजदूरों के बारे में बताया गया है कि गांवो में किस प्रकार की मजदूरी दी जाती थी ।[35] जो उद्योग कृषि से सम्बन्धित थे तथा गांव में स्थापित ये उनकी मजदूरी के बारे कोई अन्दाजा नहीं लगाया जा सकता है कि इन मजदूरों का क्या दिया जाता था ।[36]

परन्तु शहरों में विभिन्न कारीगरों को मजदूरी दी जाती थी जो नकद के रूप में होती थी । जो कारीगर शाही कारखानों, या शाही अश्वशलाओं में काम करतें थे उनकी ओर ज्यादा ध्यान दिया जाता

---

[30] बदायनी, *मुन्तखब–उत्–तवारिख, जिल्द तृतीय,* अंग्रेजी अनुवादित, टी डब्ल्यू हेग, कलकता 1973, पृष्ठ 274
[31] ओम प्रकाश, पूर्वउद्धृत, पृष्ठ 10
[32] इलियट एण्ड डाउसन, जिल्द पांच, पृष्ठ 319
[33] नीलम चौधरी, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 129
[34] आइन अकबरी, जिल्द प्रथम, पृष्ठ 164, 170
[35] सीरीन मुसवी, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 4
[36] मोरलैण्ड, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 170

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

था ।[37] मजदूरी कई रूपों में मिलती थी जैसे प्रतिदिन, प्रतिमाह तथा टुकड़ो में । निचले स्तर के मजदूर जैसे घास काटने वाले, झाडू मारने वाले, चाहकन (कुआ खोदने वाले), खिश्त तराश को प्रति दिन मजदूरी मिलती थी, इन्हे काम करने के घंटो के हिसाब से मजदूरी दी जाती थी । ये अकुशल मजदूर होते थे जो कृषि तथा गैर कृषि कार्यो में अन्य कारीगरों की सहायता करते थे ।[38]

अबुल फजल द्वारा आइने अकबरी में विभिन्न मजदूरों की मजदूरी पर प्रकाश डाला गया है जिसका निम्नलिखित वर्णन किया गया है ।[39]

मजदूर या कारीगर	**प्रतिदिन**	**प्रतिमाह**
झाडू लगाने वाला	2.17 दाम	65 दाम
अश्वशाला में पानी ले जाने वाला	3 से 4 दाम	100 दाम
बांस काटने वाला	2 दाम	100 दाम
गिल्कार (दिवार बनाने वाला)	4 से 7 दाम	150 दाम
संगतराश (पत्थर काटने वाला)	1 से 6 दाम	100 दाम
आराकश (प्रतिवर्ग के लिए)	2 दाम	60 दाम

ये मजदूर थे जिनको प्रतिदिन काम करने के बदले मजदूरी दी जाती थी । मजदूरी मुख्यतः दाम के रूप में दी जाती थी । दाम रूपये का चालीसवां हिस्सा होता था । कई अधिकारी प्रति महीने के हिसाब से आय न लेकर किस्तों या 15 दिन या 10 दिन में मजदूरी लेते थे परन्तु इनकी मजदूरी प्रतिदिन काम करने वाले मजदूरों से ज्यादा होती थी । कुछ ऐसे ही मजदूर शाही कारखानों तथा उद्योगो में स्थापित थे । जिनकी मजदूरी निजी उद्योगो की अपेक्षा कम होती थी ।[40]

जहांगीर के शासन काल में आए विभिन्न विदेशी यात्रियों द्वारा यहां के लोगो की मजदूरी का वर्णन किया गया है कि मजदूरी का क्या तरीका दिया है । उसके अनुसार मजदूरी प्राप्त करने के लिए मजदूर प्रक्तियों में खडे रहते थे ।[41]

ये मजदूरी शाही दरबार में रहने वाले खुले रूप में काम करने वाले मजदूरों की दी गई थी । मोरलैण्ड द्वारा मजदूरी का वर्णन दामों की बजाए रूपये के रूप में किया है ।[42] उसके अनुसार –

मजदूर	**प्रतिदिन**	**रूपयों में**
साधारण मजदूर को	2 दाम	साढे पांच आने
श्रेष्ठ मजदूर	3 से 7 दाम	आठ से 11 आने

---

[37] सीरीन मुसवी, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 332–335
[38] वही, पृष्ठ 332,35
[39] अबुल फजल आइने अकबरी, जिल्द एक और दो, हिन्दी अनुवादित, पृष्ठ 163–165
[40] वही, पृष्ठ 164–165
[41] मोरलैण्ड, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 170
[42] वही, पृष्ठ 170

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

बढई	3 से 7 दाम	साढे आठ आने या 1रूपया
राजगीर	5 से 7 दाम	1आने से 4 रूपये मजदूरी दी जाती थी ।

परन्तु इसके द्वारा भी कुल मजदूरों तथा प्रत्येक मजदूरी का वर्णन नही दिया गया है । परन्तु इन मिलने वाली मजदूरी से आम शाही खजाने मे से बहुत सी मजदूरी मजदूरों में बॅटती थी । परन्तु इनको अतिरिक्त कुछ ऐसे मजदूर भी होते थे जिनको कोई मजदूरी नही दी जाती थी । ये शाही महलों तथा शाही कारखानों में स्थापित होते थे । ऐसे मजदूरों को अर्धदास मजदूर भी कहा जाता था ।

निश्कर्श

उपरोक्त विवरण के आधार पर स्पष्ट है कि समाज में हर वर्ग की स्थिति एक जैसी नहीं थी । समाज मे एक वर्ग उत्पादक था जबकि दूसरा उपभोक्ता । उत्पादक वर्ग चाहे उत्पादन करता था परन्तु उसे केवल उतना ही प्राप्त होता था जिससे कि केवल गुजारा कर सके वह दूसरी तरफ सोच भी नहीं सकता था । अकाल, वर्षा, सूखा तथा राजनैतिक गतिविधियों के कारण उसे बहुत हानि उठानी पडती थी । जबकि एक उपभोक्ता वर्ग था । चाहे मौसम परिस्थितियां कैसी भी हो उसका जीवन स्तर वही रहता था । जाति प्रथा ने निम्न वर्ग को निम्न ही रहने दिया । वे चाहकर भी अपने आपको समाज की सामान्य धारा से नहीं जोड़ पाये । चाहे कितना भी कारीगर, मजदूर या शिल्पी हो उसे एक सामान्य सैनिक की तुलना में बहुत कम वेतन प्राप्त होता था ।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies